दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

□ वर्ष 64 □ अंक-13 □ दिल्ली □ अप्रैल (प्रथम) □ मूल्य : 2 रु.

डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल एवं नेशनल पुरस्कारों की घोषणा

डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल अवार्ड-डा. राहुल दीपांकर को

नई दिल्ली, 14 अप्रैल, 2026

भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने भारतरत्न बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर की 135वीं जयन्ती के शुभावसर पर 'डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल एवं नेशनल अवार्डों की घोषणा की है। अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने बताया कि इस वर्ष 2026 का डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल अवार्ड के लिए सुप्रसिद्ध समाजसेवी डा. राहुल दीपांकर के नाम का चयन किया गया है। डा. राहुल दीपांकर बाबा साहब डा. अम्बेडकर के अटूट भक्त हैं और पिछले 15-20 वर्षों से वे भारत व अमेरिका के अतिरिक्त अन्य देशों में भी भगवान बुद्ध व बाबा साहब डा. अम्बेडकर के मानवता से परिपूर्ण विचारों का प्रचार करने में लगे हैं। उन्होंने बाबा साहब के मिशन व दर्शन को आगे बढ़ाया है और इसके लिए उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थानों व अस्पतालों की स्थापना की है। उन्होंने भगवान बुद्ध व बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समता के दर्शन व विजन पर अनेक पुस्तकों की रचना की है। डा. दीपांकर ने अनेक दलित युवाओं को अपना मार्गदर्शन व आर्थिक सहयोग देकर आगे बढ़ाया है। इसलिए वह उनके लोकप्रिय विशिष्ठ महापुरुष हैं। उनके इन्हीं अद्वितीय गुणों के कारण अकादमी ने उनके नाम का **डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल अवार्ड–2026** के लिये चयन करके सम्मानित करने की घोषणा की है।

डा. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड-2026

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर के अनुसार दलित साहित्य की अभिवृद्धि तथा दलितोत्थान के कार्यों में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए जिन 10 विशिष्ठ महानुभावों के नामों का चयन 'डा. अम्बेडकर नेशनल अवार्ड' के लिए किया गया है, वे इस प्रकार हैं–

दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए

1. **डा. इस्पाक अली,** साहित्यकार, प्रिंसिपल–बी.एड. कालेज दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति, बंगलौर (कर्नाटक)
2. **डा. (श्रीमती) सुशीला टांकभोरे** वरिष्ठ दलित साहित्यकार, नागपुर (महाराष्ट्र)
3. **श्री विश्वजीत मंडल,** दलित साहित्यकार रिटायर्ड आई.आर.एस., कोलकाता (प. बंगाल)
4. **श्री सुधीर हिलसायन,** वरिष्ठ दलित साहित्यकार सम्पादक–सामाजिक न्याय संदेश डा. अम्बेडकर फाउन्डेशन, भारत सरकार, नई दिल्ली
5. **श्री करनेल सिंह वजीराबाद,** वरिष्ठ दलित साहित्यकार दशमेश नगर, मंडी गोविन्द गढ़ (पंजाब)

दलित धर्म प्रचार की अभिवृद्धि के लिए

1. **डा. टी. महेन्द्र वर्मा** रिटायर्ड प्रधानाचार्य मेम्बर, स्टेट माईनियर्टी कमेटी, तमिलनाडु सरकार (तमिलनाडु)

दलितोत्थान सेवा के लिए

1. **श्री सूरजभान कटारिया** सोशिल वर्कर – दलित अधिकारों के लिये संघर्षशील एक्टीविष्ट, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
2. **डा. विश्वनाथ धूमल** सोशिल वर्कर– दलित साहित्यकार जनरल सेक्रेट्री– भा.द.सा. अकादमी, कर्नाटक
3. **प्रो. (डा.) पीतम्बर दास** सोशिल एक्टीविष्ट वरिष्ठ प्रोफेसर, महात्मा गांधी काशी यूनिवर्सिटी, वाराणसी (उ.प्र.)
4. **डा. जी.एस. धवन,** एम.बी.बी.एस. (सोशिल एक्टीविष्ट) महामंत्री, भा.द.सा. अकादमी, मध्य प्रदेश (उज्जैन)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने सभी सम्मानित व्यक्तियों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की है कि वे भविष्य में भी बाबा साहब डा. अम्बेडकर व बाबू जगजीवन राम जी के साथ दलित समाज के गुरुओं और महापुरुषों के सामाजिक समता के कारवां को आगे बढ़ाते हुए समग्र दलित समाज की भावी पीढ़ी के लिए आदर्श बने रहेंगे। अकादमी के 42वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन, दिल्ली में **12 दिसम्बर, 2026** को उपरोक्त महानुभावों को पुरस्कार में शाल, शील्ड, प्रशस्ति–पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा।•

सम्पादकीय

बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष जीते, अगर उन्हें अपनों से धोखा और गांधी जी द्वारा छलावा नहीं मिलता

*** डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**

भारतरत्न बाबा साहब डा. अम्बेडकर की हम 135वीं जयंती मना रहे हैं। वह 14 अप्रैल, 1891 में महू छावनी (म.प्र.) में पैदा हुए और 6 दिसम्बर, 1956 को सुप्रसिद्ध पुस्तक 'बुद्धा एंड हिज धर्मा' की भूमिका लिखकर 68 साल के छोटे से जीवन में उन्होंने हम सबसे विदाई लेकर भारत संविधान के निर्माण से लेकर सभी विधाओं पर सैकड़ों ग्रन्थ लिखकर मार्गदर्शन के रूप में हमारे लिए छोड़कर बता गये कि जीवन भले ही छोटा हो, पर वह सार्थक हो। दुनिया के चुनिन्दा विद्वानों में वह अकेले ही एक ऐसे विलक्षण विद्वान हैं जिनके नाम पर सर्वाधिक डिग्रीयां सभी विषयों में दर्ज हैं।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर शतायु यानी सौ वर्ष तक जीवित रह सकते थे बशर्ते उन्हें अपनों से और हिन्दू समाज के हिन्दू धर्मावलम्बी से उनका सीधा टकराव न होकर उन्हें उन सबका सहयोग मिला होता। बाबा साहब डा. अम्बेडकर समाज, धर्म और राजनीति में धर्माचार्यों व राजनीतिज्ञों के सीधे जूझते रहे, बिना थके उनका मुकाबला करके उन्हें निरस्त व परास्त करते रहे और उनके सामने कभी हार नहीं मानी, पर अपने लोगों से प्रशंसा के 'दो शब्द' की जगह अपने समाज के लिए अपना सर्वस्व दांव पर लगाने के बावजूद भी कोई सहयोग नहीं मिला। उन्होंने दलित समाज के जिन शिक्षित युवकों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशों में भेजा था, शिक्षा समाप्ति के बाद उच्च डिग्रियां लेकर भारत लौटे और सरकारी संस्थानों में उच्च पदों की नौकरी पर आसीन हो गये। इसके लिए उन्होंने बाबा साहब डा. अम्बेडकर से मिलकर उनका धन्यवाद करने की बजाय वे सभी सरकारी कोठियों और बड़ी–बड़ी सरकारी घरों में नौकर–चाकरों के बीच अय्यासी व वैभव का जीवन जीने लगे। वे उच्च पदों पर आसीन होकर अपने गरीब समाज और अपने पुरातन जीवन को भूलकर बाबा साहब डा. अम्बेडकर को ही भूल गये जिन्होंने विदेशों में उच्च शिक्षा ग्रहण करके अपने देश भारत में लौटकर अपने गरीब समाज की सेवा की। बाबा साहब डा. अम्बेडकर को इन लोगों के दुर्व्यवहार ने झकझोर दिया और उन्हें बहुत बड़ी चोट लगी, तभी तो उन्होंने बड़े दुख के साथ कहा था–मेरे समाज के पढ़े लिखे लोगों ने मुझे धोखा दिया है जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए विदेश इसलिए भेजा था ताकि स्वदेश लौटकर वे अपने दलित समाज की सेवा करेंगे पर वे तो भारत लौटकर उच्च पद पाकर कोठी–बंगला लेकर पद की चकाचौंध में अपने दलित समाज को ही भूल बैठा है।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर के सामने एक आदर्श, कर्तव्यपरायणता, तथा वायदा निभाने के संकल्प का था जो उन्होंने बड़ौदा के महाराजा गायकवाड़ द्वारा उन्हें छात्रवृति देकर विदेश भेजने का करारनामा था,

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

सम्पादकीय का शेष भाग.....बाबा साहब डा. अम्बेडकर सौ वर्ष जीते, अगर उन्हें अपनों से धोखा और गांधी जी द्वारा छलावा नहीं मिलता

जिसे शिक्षा प्राप्ति के बाद भारत लौटकर उनके 'मिलिट्री सेकेट्री' के पद पर आसीन हो, अपने वायदे को निभाया। इसलिए अपने लोगों द्वारा उन्हें धोखा देने पर उनके दिल को टीस लगी और उससे आहत होकर उन्हें यह कहना पड़ा। ऐसे उच्च पद पर आसीन लोगों के दुर्व्यवहार से इतने आहत हुए कि उन्होंने अपने समाज के लोगों को समाज सेवा से तोलकर ही उनकी मदद की। बाबा साहब डा० अम्बेडकर को निराश तो किया ही ऐसे लोगों ने, इसी लिए उनका यह कहना भी न्यायोचित है–

हमें तो लूटा है अपने लोगों ने
वरना गैरों में कहां था इतना दम।
हमारी किश्ती भी वहां जाकर डूबी
जहां था पानी कम।।

बाबा साहब डा० अम्बेडकर को अपने दलित समाज के लोगों ने ज्यादातर अवसरों पर निराश किया और दुख ही दिया, जिसका आघात उनके दिल व दिमाग पर पड़ा, पर उन्होंने दलित समाज के उत्थान के लिए संघर्ष करने से मुंह नहीं मोड़ा। उनके जीवन का पहला संघर्ष महाड़ के चौबदार तालाब का ताला खुलवाने का सत्याग्रह था जहां पशु तो तालाब का पानी पी सकते थे पर उस तालाब के पानी पीने में अछूत दलित समाज के लोगों के लिये पूरी पाबन्दी थी। बाबा साहब डा० अम्बेडकर ने सत्याग्रह करके महाड़ के चौबदार तालाब के अछूत दलितों के लिए खुलवाया जहां अब वे तालाब में जाकर उसका पानी पी सकते थे।

बाबा साहब डा० अम्बेडकर ने इसके बाद नासिक के कालाराम मंदिर के कपाट दलितों के लिए खुलवाने के लिए अपने लोगों के साथ सत्याग्रह शुरू किया और काफी संघर्ष के बाद वे कालाराम मन्दिर के कपाट खुलवाने में सफल हुए। अब कालाराम मन्दिर में जाकर अन्य सवर्णों की तरह दलित समाज के अछूत लोग पूजा पाठ कर सकते थे।

इन दो घटनाओं में बाबा साहब डा० अम्बेडकर का नाम व कद दलित समाज में बहुत ऊंचा कर दिया। बाबा साहब अब दलितों को समाज, सरकार और शिक्षण संस्थाओं में सवर्णों की तरह बराबरी के अधिकार दिलाना चाहते थे। इसके लिए मौजूदा अंग्रेजी हुकूमत के सामने अपने अछूत–दलितों के लिए मांगें रखीं और जब दलितों की दुर्दशा की जांच करने इंग्लैंड से आये प्रिंसज चार्ल्स और साइमन कमिशन के सामने अपना चार्टर्ड ऑफ डिमांड रखा। उसके बाद ब्रिटिश की अंग्रेजी सरकार ने भारत के दलितों की मांगों पर विचार करने के लिए इंग्लैंड में कान्फ्रेंस बुलाई। इसमें बाबा साहब डा० अम्बेडकर को भारत के दलितों के प्रतिनिधि के रूप में आमन्त्रित किया गया। हिन्दू पक्ष की ओर से इसमें महात्मा गांधी को आमन्त्रित किया गया।

बाबा साहब डा० अम्बेडकर के दलित प्रतिनिधि के रूप में इंग्लैंड की राउन्ड टेबुल कान्फ्रेंस में आमंत्रित करने की खबर से भारत के दलितों के अन्दर खुशी की लहर दौड़ गई। सबकी आशा अब बाबा साहब पर टिकी थी कि वे इस कान्फ्रेंस में इंग्लैंड जाकर ब्रिटिश सरकार से उनके हक दिलवायेंगे।

इंग्लैंड की 1930 में आयोजित कान्फ्रेंस में हिन्दू पक्ष के प्रतिनिधि महात्मा गांधी शामिल नहीं हुए, पर 1931 में आयोजित दूसरी कान्फ्रेंस में वे शामिल हुए। इस बीच बाबा साहब डा० अम्बेडकर और महात्मा गांधी का आमना सामना हुआ। इस कान्फ्रेंस की शुरूआत करते हुए गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार से एतराज जताया कि मैं भारत के हिन्दुओं का एकमात्र प्रतिनिधि हूं और चूंकि वहां के दलित अछूत हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज के अंग हैं, इसलिए भारत के दलितों (अछूतों) का एकमात्र प्रतिनिधि तभी मैं हूं, डा. अम्बेडकर नहीं। बाबा साहब डा० अम्बेडकर ने इस पर गांधी जी का विरोध करते हुए कहा कि भारत के अछूत दलित न तो हिंदू धर्म का अंग है और न ही उन्हें हिन्दूधर्म के समानता के अधिकार प्राप्त हैं, वे मन्दिरों, नदी घाट, कुआं–तालाबों में प्रवेश नहीं कर सकते हैं और न ही सरकार व शिक्षण संस्थानों में प्रवेश दिया जाता है। वे भारत में दोयम दर्जे के नागरिक हैं। वे छुआछूत और अवमानना के शिकार हैं, क्या गांधी जी किसी अछूत (दलित) के हाथ का पानी पीने के लिए तैयार हैं? मैं समझता हूं कि बिल्कुल नहीं। ऐसी हालत में गांधी जी भारत के दलितों के प्रतिनिधि नहीं हो सकते। मैं ही उनका एकमात्र प्रतिनिधि हूं। डा. अम्बेडकर व गांधी जी के बीच काफी तूतू–मैंमैं के बाद उस दिन की कान्फ्रेंस खत्म हो गई।

कान्फ्रेंस के दूसरे दिन के कार्यक्रम के शुरू होते हुए बाबा साहब डा० अम्बेडकर ने 50 से ऊपर उन केबल (तारों) को दिखाते हुए कहा कि ये सब तार उन्हें भारत के विभिन्न प्रदेशों से भेजे गये, मिले हैं। इन सबमें लिखा है कि बाबा साहब डा० अम्बेडकर हमारे दलित नेता हैं, प्रतिनिधि हैं, और कोई नहीं। ये सब भारत के विभिन्न प्रदेशों से दलितों की ओर से भेजे गये हैं जहां मैं कभी गया ही नहीं, पर वे मुझे ही दलितों का एकमात्र नेता मानते हैं।

वहीं ब्रिटिश अंग्रेजी सरकार ने प्राप्त हुए उन तारों के आधार पर उन्हें भारत के दलित–अछूतों का नेता मानते हुए उनकी ओर से पक्ष रखते के लिए डा. अम्बेडकर को आमंत्रित किया। कान्फ्रेंस में डा. अम्बेडकर ने अच्छे ढंग से भारत के दलित अछूतों का पक्ष रखते हुए कहा कि उन्हें न तो वोट देने का अधिकार है और न ही शिक्षण संस्थानों और न ही सरकारी पदों पर जगह दी जाती है। उन्हें अछूत मानते हुए सवर्ण हिन्दू उनके साथ

छुआछूत बरतते हैं और जबरदस्ती बेगार लेते हैं और मना करने पर उनके साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। भारत में मौजूद अंग्रेजी हुकुमत भारत को आजादी देने जा रहा है। यह आजादी भारत के सवर्णों के लिए आजादी होगी। अंग्रेजी हुकूमत के बाद भी भारत के दलित–अछूत तो सवर्णों के गुलाम बने रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि भारत के दलितों को सवर्णों की तरह देश की सत्ता, निर्वाचन, सरकार व शिक्षण व संस्थानों में उनकी आबादी के अनुपात में हिस्सेदारी दी जाए। इसके बाद कांफ्रेंस खत्म हो गई।

बाबा साहब डा० अम्बेडकर की सभी मांगों को उचित मानते हुए अंग्रेजी सरकार ने भारत के अछूत–दलितों को अन्य सवर्णों को मिले अधिकारों के समान अधिकार देने के लिए 'कम्यूनल अवार्ड' की घोषणा की। इसके अन्तर्गत अछूतों को निर्वाचन में 'दो वोट' देने का अधिकार दिया गया। एक वोट से वे अपना अछूत– दलित व्यक्ति को चुन सकते हैं और दूसरे वोट से वे सवर्ण उम्मीदवार को चुन सकते थे। इसके अलावा उन्हें उनकी आबादी के अनुपात में सरकार की विभिन्न समितियों, सरकारी शिक्षण संस्थानों में पद आरक्षित किये जाने का प्रावधान था। इसके साथ अछूत उम्मीदवारों के लिए आरक्षित सीटों के पृथक बोर्डों का निर्धारण भी था। ब्रिटिश अंग्रेजी सरकार का कहना था कि इस कम्युनल अवार्ड के लागू होने पर दलित अछूत सत्ता, सरकार और शिक्षण संस्थानों में सवर्णों के बराबर हो जायें।

अंग्रेजी हुकूमत ने भारत के अछूत–दलितों का दिया 'कम्युनल अवार्ड' चूंकि बाबा साहब डा० अम्बेडकर की इंग्लैंड की राउंड टेबुल कांफ्रेंस में की गई मांगों के एवज में दिये विशेष अधिकार थे जो महात्मा गांधी को मंजूर नहीं था। गांधी जी इसे अपनी पराजय और डा. अम्बेडकर की विजय माना। इसलिए इसका श्रेय डा. अम्बेडकर को न चला जाये, इसलिए भारत के अछूत दलितों को अंग्रेजी सरकार द्वारा मिले 'कम्युनल अवार्ड' को वापिस कराने के लिए गांधी जी ने आमरण अनशन की घोषणा कर दी और कहा कि अगर यह 'कम्युनल अवार्ड' लागू हो जायेगा तो भारत के अछूत लामबंद होकर हिन्दू धर्म छोड़ देंगे, और इस तरह हिन्दू धर्म खत्म हो जायेगा। इसलिए जब तक यह 'कम्युनल अवार्ड' वापिस नहीं होगा, तब तक वे अन्न–जल ग्रहण नहीं करेंगे भले ही इसके लिए उनकी मृत्यु हो जाये।

गांधी जी की इस आमरण अनशन की घोषणा से हिन्दू धर्म के सिहर उठे कि अगर 'कम्युनल अवार्ड' वापिस नहीं हुआ तो गांधी जी की जीवन खतरे में पड़ जायेगा और हो सकता है आमरण अनशन से उनकी मृत्यु हो जाये। इसलिए उन्होंने बाबा साहब डा. अम्बेडकर पर जोर डालना शुरू किया कि वे ब्रिटिश सरकार द्वारा अछूत–दलितों के उद्धार के लिए 'कम्युनल अवार्ड' को लौटा दे वरना गांधी जी की मृत्यु की सारी जिम्मेदारी उनकी होगी और उसके बाद सवर्ण हिन्दू और अछूतों के बीच होने वाले खून खराबे की जिम्मेदारी भी उनकी होगी। स्वयं गांधी जी की पत्नी कस्तूरबा गांधी के बाबा साहब डा. अम्बेडकर के पास आंचल फैलाकर गांधी जी के प्राण बचाने की भीख मांगी।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर का अछूतों के हकों के अधिकार प्राप्त कराने के बाद अंग्रेजी सरकार से जो 'कम्युनल अवार्ड' उन्हें मिला था, वह उनके गत वर्षों के संघर्ष के रूप में मिला था। बाबा साहब डा. अम्बेडकर इसलिए 'कम्युनल अवार्ड' के रूप में मिले अधिकारों को छोड़ना नही चाहते थे, पर दूसरी ओर अछूतों के खून खराबे को देखते हुए और हिन्दू नेताओं के भारी दबाव के कारण मन से नहीं चाहते हुए भी उन्हें इस कम्युनल अवार्ड को स्वीकार न करने की घोषणा की। उनकी इस घोषणा से बाबा साहब डा. अम्बेडकर को सबसे ज्यादा आघात लगा और उन्हें लगा कि दलित–अछूतों को इतने संघर्ष के बाद मिले अधिकारों को छुड़वाने के लिए ही गांधी जी ने आमरण अनशन के सहारा लिया जिसके सामने वे छले गये हैं, और इसके लिए वह बहुत दुखी हैं कि हमने अन्याय के खिलाफ जो जंग जीती थी, उसे गांधी जी ने झूठे आमरण अनशन के सामने वे हार गये हैं। 'कम्युनल अवार्ड' को लौटाने की घोषणा से उन्हें गहरा आघात लगा और इसे अपने खिलाफ षड्यंत्र रचकर धोखा देने व छलने के लिए गांधी जी के साथ हिन्दू नेताओं को भी माना। इससे उनका रक्तचाप बढ़ गया। पर उन्होंने गांधी जी के इस षड्यंत्र के सामने फिर नये ढंग से सोचना शुरू किया।•

वर्ण व्यवस्था सुधारो तभी बनेगा भारत राष्ट्र–हीरालाल वर्मा

वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म नहीं कर्म होना चाहिए। परंतु कर्म के स्थान को जन्म ले लिया है। यह कैसे संभव है कि कुच्छेक ने तो एक जन्म से शोषण का अधिकार पाल ले और शेष जन्म जन्म से शोषित होने के लिए पैदा हों। मजे की बात तो यह कि हम शोषण चक्र के विरुद्ध जेहाद उठाते हैं। परंतु घर में ही शोषण के इस कुचक्र को नहीं तोड़ पाते हैं। जब तक हिंदू समाज की आंतरिक व्यवस्था स्वच्छ नहीं होगी, तब तक उसका राष्ट्रीय चरित्र उभर कर सामने नहीं आ सकता है। सच तो शोषित पीड़ितों दलितों के प्रति ही नहीं, बल्कि मानवता के प्रति यह अपराध है। तभी तो डा. अंबेडकर ने शोषित, पीड़ित दलित वर्ग का नारा दिया कि शिक्षित बनो और संघर्ष करो। भारतीय संविधान के निर्माता दलितों के शोषित मसीहा, भारत रत्न डा. अंबेडकर को मैं शत्–शत् नमन करता हूं।

किसने सताया तुम्हें ?
कौन सहारा बना ?
किसने गिराया तुम्हें ?
किसने रुलाया तुम्हें ?
किसने सुलाया तुम्हें?
किसने इंसान समझा तुम्हें?
करोड़ों के बीच वही था।
निडर वह एक नाम था–
डा. भीमराव अंबेडकर।
बाबा साहब डा. भीमराव
अंबेडकर जिंदाबाद।
भारत संविधान जिंदाबाद।

महात्मा ज्योतिराव फुले की 200वीं जयंती पर विशेष लेख

भारत के दिव्य पथ प्रदर्शक-महात्मा ज्योतिराव फुले

• नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

आज ग्यारह अप्रैल हम सभी के लिए बहुत विशेष दिन है। आज भारत के महान समाज सुधारकों में से एक, और पीढ़ियों को दिशा दिखाने वाले महात्मा ज्योतिराव फुले की जयंती है। इस वर्ष यह अवसर और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उनके दो सौवें जयंती वर्ष का शुभारंभ भी हो रहा है।

महान समाज सुधारक महात्मा फुले का जीवन नैतिक साहस, आत्मचिंतन और समाज के हित के लिए अटूट समर्पण का प्रेरक उदाहरण है। महात्मा फुले को केवल उनकी संस्थाओं या आंदोलनों के लिए ही याद नहीं किया जाता, बल्कि उन्होंने लोगों के मन में जो आशा और आत्मविश्वास जगाया, उसका व्यापक प्रभाव हम आज भी महसूस करते हैं। उनके विचार देशवासियों के लिए प्रेरणापुंज हैं।

महात्मा फुले का जन्म 1827 में महाराष्ट्र में एक बहुत साधारण परिवार में हुआ, लेकिन शुरुआती चुनौतियां कभी उनकी शिक्षा, साहस और समाज के प्रति समर्पण को नहीं रोक पाईं। उन्होंने हमेशा यह माना कि चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, इंसान को मेहनत करनी चाहिए, ज्ञान हासिल करना चाहिए और समस्याओं का समाधान करना चाहिए, न कि उन्हें अनदेखा करना चाहिए। बचपन से महात्मा फुले बहुत जिज्ञासु थे और अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक पुस्तकें पढ़ते थे। वे कहते भी थे– 'हम जितना ज्यादा सवाल करते हैं, उनसे उतना ही अधिक ज्ञान निकलता है।' साफ है कि बचपन से मिली जिज्ञासा उनकी पूरी यात्रा में बनी रही।

महात्मा फुले के जीवन में शिक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण मिशन बनी। उनका मानना था कि ज्ञान किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि ऐसी शक्ति है, जिसे सभी के साथ साझा किया जाना चाहिए। जब समाज के बड़े हिस्से को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, तब उन्होंने लड़कियों और वंचित वर्गों के लिए स्कूल खोले। वे कहते थे, बच्चों में जो सुधार मां के माध्यम से आता है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इसलिए अगर स्कूल खोले जाएं, तो सबसे पहले लड़कियों के लिए खोले जाएं। उन्होंने शिक्षा को न्याय और समानता का माध्यम बताया।

शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण हमें आज भी बहुत प्रेरित करता है। पिछले एक दशक में भारत ने युवाओं के लिए शोध और नवाचार को बहुत प्राथमिकता दी है। एक ऐसी प्रणाली बनाने का प्रयास किया गया है, जिसमें युवा सवाल पूछने, नई चीजें सीखने और नवाचार के लिए प्रेरित हों। ज्ञान, कौशल और अवसरों में निवेश करके भारत अपने युवाओं को देश की प्रगति में आधार स्तंभ बना रहा है।

अपने शैक्षिक ज्ञान और बौद्धिकता से महात्मा फुले ने कृषि, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों की गहरी जानकारी हासिल की। वे कहते थे कि किसानों और मजदूरों के साथ अन्याय समाज को कमजोर करता है। उन्होंने देखा कि सामाजिक असमानताएं खेतों और गांवों में लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती है। इसलिए उन्होंने गरीबों, वंचितों और कमजोर वर्गों को सम्मान दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सामाजिक सद्भाव बनाए. रखने के लिए भी हरसंभव प्रयास किए।

महात्मा फुले ने कहा था, 'जोपर्यंत समाजातील सर्वांना समान अधिकार मिलत नाहीत, तोपर्यंत खरे स्वातंत्र्य मिलत नाही।' यानी जब तक समाज में सभी लोगों को समान अधिकार नहीं मिलते, तब तक सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। इसी विचार को जमीन पर उतारने के लिए उन्होंने कई संस्थाओं की स्थापना की। उनका सत्यशोधक समाज, आधुनिक भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण समाज सुधार आंदोलनों में से एक था। यह आंदोलन सामाजिक सुधार, सामुदायिक सेवा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में अग्रणी रहा था। यह महिलाओं, युवाओं और गांवों में रहने वाले लोगों की पुरजोर आवाज बना। यह आंदोलन उनके इस विश्वास को दर्शाता है कि समाज में मजबूती के लिए न्याय, हर व्यक्ति के प्रति सम्मान और सामूहिक प्रगति जरूरी है ।

उनका व्यक्तिगत जीवन भी साहस की मिसाल रहा। लगातार लोगों के बीच रह कर काम करने का असर उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ा, लेकिन गंभीर बीमारी भी उनके संकल्प को कमजोर नहीं कर सकी।

एक गंभीर पक्षाघात के बाद भी उन्होंने अपना काम और संघर्ष जारी रखा। उनका शरीर कमजोर हुआ, लेकिन समाज के प्रति उनका समर्पण कभी नहीं डगमगाया। आज भी करोड़ों लोग उनके जीवन के इस पहलू से प्रेरणा लेते हैं।

महात्मा फुले का स्मरण, सावित्रीबाई फुले के सम्मानजनक उल्लेख के बिना अधूरा है। वे स्वयं भारत की महान समाज सुधारकों में से एक थीं। भारत की पहली महिला शिक्षिकाओं में शामिल सावित्रीबाई ने लड़कियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने में बेहद अहम् भूमिका निभाई। महात्मा फुले के निधन के बाद भी उन्होंने इस कार्य को जारी रखा। वर्ष 1897 में प्लेग महामारी के दौरान उन्होंने मरीजों की इतनी सेवा की कि वे स्वयं भी बीमारी की शिकार हो गईं और उनका निधन हो गया।

भारतभूमि बार–बार ऐसी महान विभूतियों से धन्य होती रही है, जिन्होंने अपने विचार, त्याग और कर्म से समाज को मजबूत बनाया है। उन्होंने बदलाव का इंतजार नहीं किया, बल्कि स्वयं बदलाव का माध्यम बने। सदियों से हमारे देश में समाज सुधार की आवाज उन्हीं लोगों से उठी है, जिन्होंने पीड़ा को भाग्य नहीं माना, बल्कि उसे खत्म करने के प्रयासों में जुटे रहे। महात्मा ज्योतिराव फुले भी ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे।

मुझे 2022 में पुणे की अपनी यात्रा याद है, जब मैंने महात्मा फुले की भव्य प्रतिमा पर उन्हें श्रद्धांजलि दी थी। उनके दो सौवें जयंती वर्ष की शुरुआत पर हम उनके विचारों को अपना कर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। हमें शिक्षा के प्रति अपने संकल्प को मजबूत करना होगा। अन्याय के प्रति संवेदनशील बनना होगा और यह विश्वास रखना होगा कि समाज अपने प्रयासों से ही खुद को बेहतर बना सकता है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि समाज की शक्ति को जनहित और नैतिक मूल्यों से जोड़ कर भारत में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। यही कारण है कि आज भी उनके विचार करोड़ों लोगों में नई उम्मीद जगाते हैं। महात्मा ज्योतिराव फुले दो सौ साल बाद भी केवल इतिहास का नाम नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के मार्गदर्शक बने हुए हैं। •

दलित समाज के क्रान्तिवीर–बाबू मंगूराम

• इंजी. भगवानदास अहिरवार

दलितों की उन्नति के लिए तीन शक्तियों – कौमियत, मजहब और मजलिस (संगठन) की आवश्यकता पर जोर देने वाले क्रान्तिबीर बाबू मंगूराम की दलितोत्थान की पहल का ही परिणाम है कि आज विदेशों में पंजाबी दलितों – मजहबियों, रामदासियों आदि ने अपनी अच्छी पहचान बनाई है।

इनका जन्म पंजाब के होशियारपुर जिले के मुगोवाल गांव में एक चमार दम्पत्ति श्रीमती आरती देवी और श्री हरनाम दास के यहां 14 जनवरी, 1886 को हुआ था। इनके घर में चमड़े की रंगाई का काम होता था। मंगूराम भी अपने पिता के काम में हाथ बंटाते थे। उनकी पढ़ने की तीव्र इच्छा थी परन्तु उस समय की ब्राह्मणी व्यवस्था में न तो उन्हें पढ़ने के अधिकार थे और न ही इतनी आर्थिक क्षमता उनके पास थी कि वे पढ़ सकें। अतः ब्रिटिश सरकार की अच्छी शिक्षा नीति के बावजूद भी वे महिलपुर के स्कूल में कक्षा के बाहर बैठकर और खिड़की से अध्यापक की बात सुनकर कुछ पढ़ना सीख पाये और 1905 में कक्षा 7 पास करने के बाद स्कूल छोड़ दिया।

1909 में व्यापार के उद्देश्य से वे अमेरिका गये और कैलीफोर्निया में एक चीनी मिल में नौकरी करने लगे। वहीं उनकी मुलाकात लाला हरदयाल द्वारा स्थापित गदर पार्टी के कार्यकर्ताओं से हुई जो भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्षरत थे। बाबू मंगूराम भी इसमें शामिल हो गये तथा इस पार्टी के लिए सैन फ्रैंसिसको अमेरिका में सोहन सिंह भाकना के नेतृत्व में काम करने लगे।

बाबू मंगूराम 1925 में भारत वापिस आये और यहां आकर मुगोवाल के एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ाने लगे। छुआछूत के कारण अपने लोगों को पीने के पानी की समस्या देखकर उन्होंने एक कुआं खुदवाया। तीर्थ यात्रा या भ्रमण के दौरान उन्हें मीनाक्षी मंदिर (मदुराई) में छुआछूत प्रथा के कारण प्रवेश नहीं करने दिया। कहां वे अमेरिका जैसे मानव समानता के स्वच्छ वातावरण में सांसें लेने के अनुभवी थे और कहां भारत में ब्राह्मणी दुर्व्यवस्था की घुटन भरी जिंदगी। अतः उन्होंने पंजाब आने के बाद सैन फ्रैंसिसको में गदर पार्टी के मुख्यालय को स्पष्ट तौर पर लिखा कि भारत में उनके दलित भाइयों को ब्राह्मणी व्यवस्था द्वारा गुलामी अंग्रेजी शासन की गुलामी से अत्यन्त बदतर है अतः वे अब अपने लोगों की मुक्ति के लिए संघर्ष करेंगे। अपने लोगों को संगठित करने के लिए उन्होंने मुगोवाल में 11–12 जून, 1926 को एक दलितों की सभा आयोजित की जिसमें 'आद धर्म मण्डल' बनाने का प्रस्ताव किया जिसे ध्वनि मत से स्वीकार किया गया। इस नव स्थापित मंडल के अध्यक्ष मंगूराम बनाये गये।

बाबू मंगूराम न केवल बाबा साहेब की अछूतों के लिए पृथक प्रतिनिधित्व निर्वाचन की मांग के समर्थक थे बल्कि जब गांधी जी ने इसके विरुद्ध पूना में आमरण अनशन शुरू किया तो भी उनके विरोध में अनशन करने की घोषणा की और सम्राट पंचम जार्ज को बाबा साहब के समर्थन के बारे में पत्र लिखा।

पहले पंजाब में दलित लोगों को किसान न होने के कारण जमीन खरीदने की इजाजत नहीं थी इसलिए बाबू मंगूराम ने इस मामले पर जोर देकर सरकार से दलितों द्वारा जमीन खरीदने का आदेश पारित करवा दिया। ऐसे ही उन्होंने बंधुआ मजदूरों की मुक्ति के लिए भी संघर्ष किया क्योंकि उनमें लगभग सभी के सभी दलित लोग ही होते थे जिन्हें आर्थिक मजबूरी के कारण कम दर पर या लगभग बिना किसी मजदूरी के सवर्णों के भट्टों, मिलों, खेतों आदि में काम करना पड़ना था। उनके प्रयासों से सरकार ने अनुसूचित जातियों की शिक्षा में तरक्की के लिए स्कूलों में विशेष सुविधाओं का प्रावधान किया। आजादी के बाद उन्हें स्वतंत्रता सेनानी के रूप में सम्मानित किया गया। ऐसी महान विभूति का 12 अप्रैल 1980 को परिनिर्वाण हो गया। •

हिमायती
7 / अप्रैल (प्रथम) 2026 (कुल पृष्ठ 8)
प्रकाशन तिथि : 14 अप्रैल, 2026
आर. एन. आई. नं. 40611/62
RNI No. 40611/62

दलितों की संपूर्ण आजादी के पक्षधर थे स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर'

• आशाराम गौतम

स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' का जन्म ऐसे समय में हुआ जिस समय दलित समाज और देश की बड़ी विचित्र दशा थी। हिन्दू समाज में जात–पांत, ऊंच–नीच, छुआछूत, अंधविश्वास, धर्मान्धता बुरी तरह व्याप्त थी। पराधीनता, पराश्रम, अवनति और पतन के युग में दलित क्रांति के सूत्रधार हीन भावना से सर्वदा मुक्त स्वामी अछूतानन्द जी ने अपनी वाणी से निराश दलित समाज को सहारा दिया। दलितों–अछूतों को हीन भावना त्याग कर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के लिए प्रेरित किया और 'अछूतिस्तान' की मांग की।

स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा सामाजिक एवं राजनैतिक क्रांति का आह्वान किया था। उन्होंने उपेक्षित, शोषित, सर्वहारा वर्ग को समानता के लिए संघर्ष करने के साथ–साथ समतामूलक मानवतावादी समाज की स्थापना करने के लिए शिक्षा दी थी। स्वामी अछूतानन्द जी को बाबा साहब डाक्टर भीमराव अम्बेडकर गुरुतुल्य मानते थे। उन्होंने उनसे मिलकर काम भी किया।

स्वामी अछूतानन्द जी का परिवार गांव सौरिख छिबरामऊ जनपद फर्रुखाबाद (उ.प्र.) का निवासी था। इनके पिता श्री मोती राम जी एवं माता का नाम श्रीमती राम प्यारी देवी एवं चाचा का नाम मथुरा प्रसाद था। इनके माता–पिता, चाचा सभी 1857 के गदर से पहले ही ब्राह्मणों के साथ जातीय संघर्ष हो जाने के कारण अपने पूर्वजों का गांव छोड़कर उत्तर प्रदेश के जिला मैनपुरी के अन्तर्गत तहसील सिरसा गंज के गांव उमरी में आकर रहने लगे थे।

गांव उमरी स्वामी अछूतानन्द जी की माता का मायका था। स्वामी जी का जन्म अपनी ननिहाल में सन् 1879 में हुआ। बचपन में उनका नाम हीरा लाल रखा गया। इसके बाद ही स्वामी जी के पूज्य पिता और चाचा देवीलाल छावनी चले गये और फौज में नौकरी कर ली। स्वामी जी की प्राथमिक शिक्षा सूबेदार चाचा मथुरा प्रसाद के यहां नसीराबाद (अजमेर) में हुई। उनमें शैशव काल से ही पढ़ने लिखने की रुचि थी। 14 साल की आयु तक उर्दू, अंग्रेजी, गुरमुखी और हिन्दी का अच्छा अध्ययन करके स्वामी जी साधुओं के साथ तीर्थ यात्रा पर निकल गए। सन्तों से प्रभावित होकर 'हीरा लाल' से 'हरिहरा नन्द' के नाम से संन्यास धारण किया और 24 साल की आयु तक आप देश भ्रमण करते हुए विद्या और ज्ञान में उन्नति करते रहे। इस भ्रमण में आपका विद्वानों से संपर्क हुआ। आपने संस्कृत, बंगला, गुजराती और मराठी भाषा का अध्ययन किया। इस तरह आपने आठ भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

स्वामी जी आरंभ से ही धार्मिक वृत्ति के थे और धर्म चर्चा में आपका मन बहुत लगता था। उस जमाने में आर्य समाज का बड़ा जोर था। जगह–जगह पर आर्य समाज के जलसे और शस्त्रार्थ होते थे। आप भी इन जलसों और शास्त्राथों में भाग लेने लगे। आपको आर्य समाज में कार्य करने का मौका मिला। आगरा के पथवारी में अछूत विद्यालय की स्थापना की, सिरसागंज मैनपुरी में भी अछूत विद्यालय खोला। आर्य समाज की ओर से छुआछूत का व्यवहार प्रदर्शित किया गया था, अछूत छात्रों को जमीन पर बिठाए जाने से क्षुब्ध ा होकर स्वामी जी ने आर्य समाज का कार्य करना बन्द कर दिया।

स्वामी अछूतानन्द जी सन् 1917 में दिल्ली चले गए और वहां के अछूत नेता श्री वीर रतन देवीदास जाटव, श्री जगतराम जाटव के सहयोग में अखिल भारतीय 'अछूत महा सभा' की स्थापना की तथा एक अछूत पत्रिका का भी संपादन किया। इससे स्वामी जी को दिल्ली में अछूत वर्ग का पूर्ण सहयोग मिलने लगा।

सन् 1922 ई. में इंगलैण्ड के सम्राट पंचम जार्ज के सुपुत्र प्रिंस आफ वेल्स के दिल्ली आगमन पर स्वामी जी ने उनके स्वागतार्थ तथा अछूतों की दीन हीन दशा का दृश्य चित्रण करने हेतु एक विराट अछूत सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें युवराज प्रिन्स आफ वेल्स पधारे। **इस अवसर पर उनको 17 सूत्रीय मांग एवं अभिनंदन पत्र भेंट किया जो इस प्रकार है–**

1. आदि हिन्दुओं का पृथक से चुनाव हो तथा पृथक से प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाए।
2. अछूतों की प्रगति हेतु स्कूल, विद्यालय खोले जाएं।
3. अस्पृश्यता निवारण हेतु कड़ा कानून बनाया जाए।
4. शिक्षित अछूतों को शासकीय सेवा में लिया जाए।
5. स्थानीय संस्थाओं जैसे नगरपालिका, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, ग्राम पंचायत, टाउन एरिया, नोटीफाइड एरिया आदि में भी अछूत सदस्य मनोनीत किए जाएं।
6. अछूतों को व्यापार एवं दुकानदारी कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए।
7. बेगार प्रथा को समूल समाप्त किया जाए।
8. अछूतों को सवर्ण हिन्दुओं के

समान सामाजिक अधिकार प्राप्त हों।

9. प्रत्येक शासकीय, अशासकीय कमेटियों में संख्या के अनुपात से अछूतों को प्रतिनिधित्व दिया जाए।
10. अछूत छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाए।
11. अछूत बाहुल्य गांवों में अछूत विद्यालय स्थापित किए जाएं।
12. पुलिस तथा फौज में अछूतों को भी प्रवेश दिया जाए।
13. मजदूरी में वृद्धि की जाए।
14. ग्रामीण चौकीदार पद पर अछूत भी रखे जाएं।
15. अछूत कृषकों को पड़ती भूमि के पट्टे दिए जाएं।
16. प्रांतीय विधान सभाओं में अछूत भी लिए जाएं।
17. उपरोक्त 16 मांगों को देशी राज्यों में भी लागू किया जाए।

इसको लेकर युवराज प्रिन्स आफ बेल्स अपने घर इंगलैन्ड पहुंचे तो उन्होंने भारत के करोड़ों अछूतों की करुणा कहानी अपने पिता सम्राट पंचम जार्ज को बताई और कहा कि सवर्ण लोग किस प्रकार अछूतों के साथ निरकुंशता व अमानवीय भेद–भाव का व्यवहार कर रहे हैं। उनको धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। इस पर लन्दन के सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया का भारत के वायसराय के लिए सख्त आदेश भेजा गया कि अछूतों का प्रत्येक नगर पालिका में एक–एक सदस्य रखा जाए। इसी प्रकार टाउन एरिया, नोटाफाइड एरिया, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड कौन्सिल आदि सभी शासकीय संस्थाओं में एक–एक मेम्बर अछूतों को मनोनीत किया जाए। इस आदेश का कड़ाई स पालन किया गया। इससे अछूतों को काफी लाभ मिला। इस प्रकार से अछूतों की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

सन् 1923 में स्वामी जी इटावा आए और घूम–घूम कर इटावा के गांवों में अछूत सम्मेलन कराए। वह अपने भाषणों में हिन्दू दासता की जंजीरों से मुक्ति की बात करते और हिन्दू सामाजिक व्यवस्था की घृणित मानसिकता के प्रति लोगों को जागरूक करते। उन्होंने सन् 1925 में बेनाझावर ईदगाह, कानपुर में स्थाई निवास बना लिया। गिरधारी भगत ने उन्हें जगह दी। आदि हिन्दू समाचार पत्र भी निकाला। 1927 में आदि हिन्दू मंच से पूर्ण स्वराज की मांग की। अछूतों की आजादी का दावा प्रस्तुत किया। बम्बई, पंजाब, कलकत्ता. लखनऊ, इलाहाबाद, आगरा, अल्मोड़ा, जयपुर आदि स्थानों पर अखिल भारतीय स्तर तथा जिला स्तर के सैकड़ों सम्मेलन हए। उन्होंने सन 1930 में जनपद फर्रुखाबाद क मुख्यालय फतेहगढ़ में क्वीन विक्टोरिया की मूर्ति के पास मनु जनेऊ, गीता और रामायण को जलाया था। इससे उस समय सारे उत्तर भारत में अछूत समाज की आंखें खुल गईं। इससे स्वामी जी को हर जगह से काफी सहयोग मिलने लगा।

सन 1928 में बाबा साहब डा. अम्बेडकर से स्वामी जी की प्रथम भेंट आदि हिन्दू सम्मेलन, बम्बई में हुई। बाबा साहब स्वामी जी से प्रभावित हुए और मिलकर काम करने को कहा। सन 1928 में, जिस समय भारतीय जातियों की सामाजिक दशा की जांच करने के लिए भारत में लोधियन कमीशन आया, तो उसके सामने अछूतों ने निर्भय होकर गवाहियां दीं। यह उसी का परिणाम है कि आज अछूतों के राजनीतिक अधिकार कायम हैं। इस कमीशन के साथ सहयोग करने के लिए भारतीय सदस्यों की जो कमेटी बनाई गई थी, उसके एक सदस्य भारत सरकार की ओर से बाबा साहब डाक्टर भीमराव अम्बेडकर भी चुने गए थे। जिस समय यह कमीशन लखनऊ में आया तो उसके सामने स्वामी जी के द्वारा स्थापित की गयी आदि हिन्दू सभा के सदस्यों ने जो गवाहियां दीं वह इतनी सच्ची और साफ थीं कि उन्हें सुनकर कमीशन अत्यंत प्रभावित हुआ।

लखनऊ के आदि हिन्दू सभा के एक आम जलसे में जब बाबा साहब डाक्टर अम्बेडकर पधारे तो उस समय सभासदों ने राजऋषि डा. अम्बेडकर की जय ध्वनि करके उनका स्वागत किया। बाबा साहब ने अपने भाषण के बीच में उत्तर भारत में स्वामी जी की महान सेवाओं से विमुग्ध होकर उन्हें **'विश्वविजयी श्री 108 स्वामी अछूतानंद'** कहकर उनको सम्बोधित किया।

सन 1930 में लंदन की गोल मेज कान्फ्रेन्स में भारत के अछूतों का प्रतिनिधि डाक्टर अम्बेडकर को बनाने के लिए स्वामी अछूतानंद जी ने 500 टेलीग्राम लंदन भिजवाए तथा अछूतिस्तान की मांग उठाई लेकिन जब साइमन कमीशन भारत आया तो स्वामी जी के द्वारा चलाए गए आन्दोलन से अछूतों में साहस आया और अपना पक्ष दृढ़ता से प्रस्तुत किया।

सन 1932 में पूना पैक्ट महात्मा गांधी तथा बाबा साहब डाक्टर भीमराव अम्बेडकर के मध्य हुआ था इस पर भी स्वामी अछूतानंद जी, श्री निवासन, डा. अम्बेडकर, एम.सी. राजा, अक्का जी गवई अमरावती के हस्ताक्षर हुए। अन्त में संपूर्ण जीवन हिन्दू दासता से मुक्ति के लिए आदि हिन्दू आन्दोलन के प्रवर्तक, भारत में दलित क्रान्ति के सूत्रधार, अछूतों के मुक्तिदाता स्वामी अछूतानंद जी का 23 दिन की बीमारी के बाद 22 जुलाई, 1933 को प्रातः 9.30 बजे कानुपर में निधन हो गया और उनके पार्थिव शरीर को नई जमीन कब्रिस्तान, नजीराबाद, कानपुर में समाधिष्ट कर दिया गया। आज वहां स्वामी जी का भव्य स्मारक दर्शनीय है। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। □ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 Email-sumanakshar@ymail.com

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009